International Journal for Research Trends in Social Science & Humanities
Volume 4, Issue 2
Mar-Apr 2026, PP 1-9

रोहिलखण्ड में स्थापत्य का संक्रमण: रोहिला नवाबी शैली से ब्रिटिश औपनिवेशिक वास्तुकला (1740-1900 ई0) तक

साक्षी राठौर[1]
शोध छात्रा,
इतिहास विभाग, बरेली कॉलेज, बरेली।

डॉ० विजय प्रताप सिंह[2]
असिस्टेंट प्रोफेसर,
इतिहास विभाग, बरेली कॉलेज, बरेली।

शोध सार

प्रस्तुत शोध पत्र 18वीं शताब्दी के मध्य रोहिलखण्ड क्षेत्र में घटित स्थापत्य रूपांतरण की प्रक्रियाओं का ऐतिहासिक, सामाजिक, राजनीतिक एवं सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य में बहुआयामी विश्लेषण प्रस्तुत करता है। यह अध्ययन इस तथ्य को रेखांकित करता है कि किस प्रकार रोहिला शासकों की रक्षात्मक और इस्लामी स्थापत्य कला, ब्रिटिश शासन के आगमन के पश्चात उपयोगितावादी और 'इण्डो-सारसैनिक' शैली में परिवर्तित हुई। यह संक्रमण मात्र निर्माण सामग्री का परिवर्तन नहीं, बल्कि सत्ता की प्रकृति में आए बदलाव का भौतिक प्रतिबिम्ब है। इस अध्ययन के माध्यम से मुगलोत्तर काल में विकसित स्थापत्य शैलियों के अन्तर्गत स्थानीय परंपराओं, इस्लामी वास्तु तत्वों तथा औपनिवेशिक प्रभावों के पारस्परिक अंतर्संबंधों को समझने का प्रयास किया गया है। रोहिलखण्ड की स्थापत्य परंपरा केवल सौंदर्यात्मक अभिव्यक्ति तक सीमित नहीं रही, बल्कि यह तत्कालीन सत्ता संरचनाओं, धार्मिक विचारधाराओं, सामाजिक संरचनाओं तथा आर्थिक गतिविधियों की मूर्त अभिव्यक्ति के रूप में विकसित हुई। शोध में ऐतिहासिक दस्तावेजों, स्थापत्य अवशेषों, क्षेत्रीय सर्वेक्षण, अभिलेखीय स्रोतों तथा तुलनात्मक विश्लेषण पद्धति का उपयोग किया गया है। अंततः यह शोध निष्कर्ष प्रस्तुत करता है कि रोहिलखण्ड का स्थापत्य विकास स्थानीय सांस्कृतिक अस्मिता और वैश्विक आधुनिकता के मध्य सतत संवाद का परिणाम है, जिसने इस क्षेत्र की स्थापत्य विरासत को एक विशिष्ट ऐतिहासिक पहचान प्रदान की।

मुख्य शब्द: सांस्कृतिक अस्मिता, उपयोगितावादी, इण्डो सारसैनिक शैली, रोहिलखण्ड स्थापत्य रूपांतरण।

1. प्रस्तावना

रोहिलखण्ड क्षेत्र का ऐतिहासिक विकास 18वीं शताब्दी के प्रारंभ में राजनीतिक अस्थिरता और सत्ता के हस्तांतरण की पृष्ठभूमि में हुआ। औरंगजेब की मृत्यु के बाद मुगल साम्राज्य की केंद्रीय सत्ता क्षीण होने लगी जिसके फलस्वरूप विभिन्न क्षेत्रीय शक्तियों का उदय हुआ जिनमें रोहिला प्रमुख शक्ति के रूप में उभरे। दाऊद खान के दत्तक पुत्र अली मोहम्मद खान को रुहेला राज्य का वास्तविक संस्थापक माना जाता है। उन्होंने 1740 के दशक तक बरेली, मुरादाबाद और बदायूँ के क्षेत्रों को

International Journal for Research Trends in Social Science & Humanities
Volume 4, Issue 2
Mar-Apr 2026, PP 1-9

जीतकर एक स्वतंत्र राज्य की स्थापना की जिसे रोहिलखण्ड नाम से जाना गया। 1721 से 1745 तक अली मु० खान ने रुहेला सत्ता को संगठित स्वरूप प्रदान किया। सर्वप्रथम बरेली को मु० खान द्वारा राजधानी बनाकर प्रशासनिक ढांचे की स्थापना की तथा स्थानीय जमींदारों और सैन्य शक्तियों को अपने नियंत्रण में लिया। उनके शासन काल में मस्जिदों किलों तथा प्रशासनिक भवनों का निर्माण प्रारंभ हुआ जिसने क्षेत्रीय स्थापत्य विकास की आधारशिला रखी।

1745 ई० में अली मु० खान की मृत्यु के बाद सत्ता हाफिज रहमत खान के हाथों में आई जो रुहेला संघ के महत्वपूर्ण व प्रभावशाली नेता थे। उन्होंने अहमद शाह अब्दाली की सहायता की और पानीपत के तीसरे युद्ध में मराठों के खिलाफ महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। 1774 ई० में मराठों, अवध के नवाब व ईस्ट इंडिया कंपनी के संयुक्त आक्रमण के फलस्वरूप रोहिला युद्ध हुआ जिसमें हाफिज रहमत खान की मृत्यु हो गई और रोहिलखण्ड ब्रिटिश प्रभाव क्षेत्र के अन्तर्गत आ गया। 1801 के समझौते के पश्चात यह क्षेत्र कंपनी शासन के प्रत्यक्ष अधीन हो गया जिसने पारंपरिक प्रशासनिक ढांचे को नष्ट कर आधुनिक नौकरशाही प्रणाली लागू की।

1857 के स्वतंत्रता संग्राम में रोहिलखण्ड, विशेषतः बरेली ने ब्रिटिश सत्ता के विरुद्ध महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। ब्रिटिश प्रभाव में आने के बाद यहाँ की स्थापत्य कला 'सामंतवादी सुरक्षा' से हटकर 'प्रशासनिक सुदृढ़ता' की ओर उन्मुख हुई। विद्रोह के दमन के पश्चात ब्रिटिश प्रशासन ने यहाँ कठोर नियंत्रण नीति अपनाई जिससे सेना छावनियों, न्यायालयों तथा प्रशासनिक भवनों का व्यापक निर्माण हुआ। 19वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध तक रोहिलखण्ड में रेलवे नेटवर्क, डाक व्यवस्था तथा आधुनिक नगर नियोजन का विकास हुआ, जिससे क्षेत्रीय, आर्थिक एवं सांस्कृतिक संरचना में परिवर्तन आया। इन परिवर्तनों का प्रत्यक्ष प्रभाव स्थापत्य स्वरूप पर भी पड़ा। इस प्रकार 1740 से 1900 के मध्य रोहिलखण्ड का इतिहास राजनीतिक सत्ता परिवर्तन, प्रशासनिक पुनर्गठन तथा सांस्कृतिक अंतःक्रिया की एक जटिल प्रतिक्रिया का प्रतिनिधित्व करता है। इस अध्ययन में तीन प्रमुख चरणों पर ध्यान केंद्रित किया गया है:

क्र०सं०	**चरण**	**कालखंड**	**स्थापत्य की पहचान**	**उदाहरण**
1.	रेहलकाल	1740-1774	मेहराबें, ऊँचे गुंबद, बारीक नक्काशी, पत्थर, सुर्खी-चूने का प्रयोग	हाफ़िज़ रहमत ख़ान मकबरा (बरेली), जामा मस्जिद (पीलीभीत)
2.	संक्रमणकाल	1774-1857	देशी-यूरोपीय तत्वों का मिश्रण (Hybridity), हवेलियों में खंभों का प्रयोग शुरू	रामपुर की पुरानी हवेलियाँ, नवाबों की शुरुआती कोठियाँ
3.	औपनिवेशिक काल	1858-1947	इंडो-सारासेनिक शैली, घड़ी टॉवर, लाल ईंट, गॉथिक मेहराबें	बरेली कलेक्ट्रेट, रामपुर रज़ा लाइब्रेरी, चर्च, रेलवे स्टेशन

2. साहित्य समीक्षा

रोहिलखण्ड क्षेत्र के स्थापत्य पर हुए अध्ययनों में मुख्य ध्यान प्रायः रुहेला नवाबी काल की इमारतों पर सान्द्रित रहा है। पर्सीवल स्पीयर (1965) तथा रज़ाक खान (2012) ने नवाबी स्थापत्य में फारसी मुगल और इस्लामी प्रभावों को अधोरेखित किया है। इसके अनुसार, मेहराब, गुंबद, आंगन संरचना बागों की योजना तथा सजावटी संस्करण नवाबी स्थापत्य की प्रमुख विशेषताएं हैं। रामपुर, शाहजहाँपुर व बरेली की इमारतों को इस संदर्भ में महत्वपूर्ण उदाहरण माना गया है। ब्रिटिश, औपनिवेशिक वास्तुकला पर मेटकाफ (1989), डेविस (1985) और टिलावटसन के शोध अध्ययन मौजूद हैं। जिससे प्रशासनिक भवन, शैक्षिक संस्थान और सैन्य संरचनाओं में इण्डो सारसैनिक एवं नव शास्त्रीय शैली के प्रयोग पर प्रकाश डाला गया है।
हालांकि रोहिलखण्ड क्षेत्र में नवाबी और औपनिवेशिक स्थापत्य के मध्य संक्रमण की प्रक्रिया पर शोध सीमित है। अधिकांश अध्ययन या तो नवाबी काल या सिर्फ ब्रिटिश काल पर केंद्रित रहा है और दोनों कालखण्डों के बीच आए क्रमिक परिवर्तन को जोड़कर देखने का प्रयास नहीं किया गया है। स्थानीय सामाजिक, आर्थिक और प्रशासनिक परिस्थितियों से स्थापत्य में आए परिवर्तनों का विस्तृत विश्लेषण भी कम उपलब्ध है। उपरोक्त शोध अवस्थिति को ध्यान में रखते हुए यह अध्ययन रोहिलखण्ड में रुहेला नवाबी शैली से ब्रिटिश औपनिवेशिक स्थापत्य तक हुए संक्रमण का विश्लेषण प्रस्तुत करता है। यह शोध क्षेत्रीय दृष्टिकोण से भी स्थापत्य परिवर्तन प्रक्रिया को समझने का प्रयास करता है और उपलब्ध अध्ययनों में विद्यमान अंतराल को भरने का लक्ष्य रखता है।

3. रोहिला नवाबी स्थापत्य: सामरिक सुदृढ़ता और स्थानीय तत्व

रोहिला और ब्रिटिश स्थापत्य शैलियाँ उत्तर भारत में दो भिन्न ऐतिहासिक कालखण्डों का प्रतिनिधित्व करती हैं जिनकी संरचना, उद्देश्य और बनावट में स्पष्ट अंतर दिखाई देता है। रोहिला स्थापत्य की शुरुआत मुख्यतः 18वीं शताब्दी से हुई जिसमें मुगल प्रभाव के साथ स्थानीय निर्माण परंपराओं का समन्वयीकरण देखने को मिलता है। रोहिला वास्तुकला में मुख्यतः सादगी, मजबूती और व्यावहारिकता पर ध्यान केंद्रित किया गया जिसके परिणामस्वरूप ईंट, चूने से बने भवन, छोटे गुंबद, मेहराबी द्वार तथा सीमित सजावट प्रमुख विशेषताएँ रहीं।
पीलीभीत की जामा मस्जिद स्थापत्य दृष्टि से एक महत्वपूर्ण इमारत है, जिसे 1769 में हाफिज रहमत खान द्वारा बनवाया गया था। यह मस्जिद इण्डो इस्लामिक शैली में बनी हुई है जो स्थापत्य दृष्टि से दिल्ली की जामा मस्जिद से साम्यता रखती है। इस काल की मस्जिदों में मुगल प्रभाव तो था किन्तु वे अधिक संक्षिप्त और ठोस थीं। रोहिला स्थापत्य के प्रमुख सिद्धांतों–स्थायित्व, लखौरी ईंटों की संरचना, गुंबद और मेहराबी द्वार का सजीव उदाहरण है। मेहराबों में नुकीलेपन (**Pointed Arches**) का प्रयोग अफगानी प्रभाव को सिद्ध करता है। इसके अतिरिक्त नजीबाबाद किला जो 18वीं सदी का एक प्रमुख सैन्य स्थापत्य का उत्कृष्ट नमूना है जिसका निर्माण 1755 ई० में नजीब-उद-दौला द्वारा किया गया था। यह किला उस समय सैन्य आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु बनवाया गया था। किले की मोटी दीवारें, प्राचीर इसके मजबूत संरक्षण और युद्ध कालीन कार्यों की रूपरेखा को दर्शाती है। इसकी निर्माण सामग्री में मूलतः पत्थर

और चूने का प्रयोग हुआ है। नजीबाबाद का किला और रामपुर की आरंभिक संरचनाएं मलबे की चिनाई (**Rubble Masonry)** और भारी बुर्जों के प्रयोग को दर्शाती हैं। वर्तमान में यह किला **Archaeological Survey of India** द्वारा संरक्षित है। यह रोहिला कालीन स्थापत्य के महत्वपूर्ण अवशेषों में गिना जाता है।
रोहिला शासन उस समय अस्थिरता के दौर से गुजर रहा था इसलिए उनके भवनों में मैक्युलेशन (**Machicolations)** और भावी प्राचीरें प्रमुख अंग हुआ करती थीं। इसके विपरीत रोहिला मस्जिदों में मुगल वास्तुकला की तरह अलंकरण देखने को कम मिलता है, यह उनकी पश्तून चरित्र की कठोरता और रूढ़िवादिता को प्रतिबिंबित करता था। रोहिला स्थापत्य केवल ईंट-पत्थर का मेल नहीं था बल्कि यह 'अफगान अस्मिता' का प्रदर्शन था। कुछ प्रमुख इमारतों का विवरण निम्नवत् है:

क्र०सं०	**इमारत**	**स्थापत्य विशेषताएँ**	**ऐतिहासिक महत्व**
1.	जामा मस्जिद (पीलीभीत)	ईंट व चूने का निर्माण, तीन गुंबद तथा मेहराबी द्वार, खुला प्रांगण, विशिष्ट नक्काशीदार खंभे	1769 ई० में हाफ़िज़ रहमत ख़ान द्वारा बनवाई गई – रोहेला स्थापत्य का प्रमुख उदाहरण
2.	नजीब-उद-दौला का मकबरा (नजीबाबाद)	गुंबद और मेहराब, आयताकार प्रांगण, सीमित सजावट	1751 में नजीबुद्दौला के सम्मान में निर्मित; रोहेलखंड की राजनीतिक एवं सांस्कृतिक धरोहर का प्रमाण
3.	नजीबाबाद किला	मोटी दीवारें, प्राचीर, गढ़बंदी, पत्थर और ईंट का मिश्रित निर्माण	1755 में नजीबुद्दौला द्वारा निर्मित
4.	नजीबाबाद जामा मस्जिद	त्रि-गुंबद योजना, चारमीनार शैली, खुला प्रांगण, स्थानीय ईंट-चूने का प्रयोग	1797 में निर्मित; किले के धार्मिक एवं प्रशासनिक केंद्र के रूप में उपयोग

3. **संक्रमण का संधिकाल: संक्रमण और अनुकूलन**

19वीं सदी के उत्तरार्द्ध में रामपुर रियासत के नवाबों ने ब्रिटिश प्रभाव को स्वीकार करते हुए एक मिश्रित शैली विकसित की जिसका बेहतरीन नमूना रामपुर की रज़ा लाइब्रेरी के रूप में देखा जा सकता है। यह भवन संक्रमण का सर्वश्रेष्ठ प्रतिमान है। मूल रूप से इस भवन को "हामिद मंजिल" के नाम से जाना जाता था, जिसका निर्माण नवाब हामिद अली खां के काल में हुआ था। बाद में इसे रज़ा लाइब्रेरी के रूप में विकसित किया गया। यह इण्डो-सारसैनिक शैली का प्रारंभिक रूप था जहाँ औपनिवेशिक आधुनिकता और नवाबी विरासत का संगम हुआ। इस भवन में नुकीली मेहराबें, गुंबद, जालीदार खिड़कियां तथा सजावटी प्लास्टर मुगल प्रभाव को दर्शाते हैं। छतरियाँ, छज्जे एवं झरोखे भारतीय तत्वों का प्रतिनिधित्व करते हैं, जबकि कोरिन्थियन

स्तम्भ, पेडिमेंट और सममितीय संरचना यूरोपीय नव शास्त्रीय शैली से प्रभावित है। इस भवन की योजना आयताकार है तथा इसमें केंद्रीय प्रांगण और इसके चारों ओर बरामदे बने हुए हैं। इस भवन का निर्माण भारतीय जलवायु के अनुकूल किया गया है। ऊँची छतें, मोटी दीवारें, बड़े झरोखे प्राकृतिक प्रकाश एवं वायु संचार में सहायक हैं। इस प्रकार रज़ा लाइब्रेरी न केवल स्थापत्य सौंदर्य का प्रतीक है, बल्कि सांस्कृतिक समन्वय और ऐतिहासिक चेतना का भी महत्वपूर्ण उदाहरण है।

4. ब्रिटिश औपनिवेशिक वास्तुकला: नव शास्त्रीय और उपयोगितावादी

रोहिलखण्ड में ब्रिटिश कालीन स्थापत्य 19वीं से 20वीं शताब्दी के दौरान विकसित हुआ। यह स्थापत्य न केवल भौतिक संरचनाएं थीं अपितु वे औपनिवेशिक सत्ता, वैचारिक प्रभुत्व तथा सांस्कृतिक वर्चस्व की संगठित अभिव्यक्ति थीं। थॉमस मेटकाफ के अनुसार औपनिवेशिक स्थापत्य साम्राज्यवादी प्रतिनिधित्व का माध्यम था, जिसके द्वारा सत्ता स्वयं को वैध और स्थायी रूप में प्रस्तुत करती थी। ब्रिटिश स्थापत्य को दो श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है: नव शास्त्रीय और उपयोगितावादी।
उन्नीसवीं सदी के प्रारंभ में अंग्रेजों ने रोहिलखण्ड में सार्वजनिक भवनों के लिए नव शास्त्रीय शैली को अपनाया। जिसकी प्रमुख विशेषताएँ भव्य स्तम्भ (डोरिक, आयोनिक, कोरिन्थियन), पेडिमेंट्स, सममितीय संरचनाएं शामिल थीं। बरेली की पुरानी कचहरी, टाउन हॉल, रामपुर की कुछ प्रशासनिक इमारतें इसी के अन्तर्गत आती हैं। वहीं प्रशासनिक और सैन्य संरचनाएं सजावट के बजाय कार्यक्षमता पर केंद्रित थीं। बरेली छावनी और बैरकों में इस शैली का चरम रूप मिलता है। ये संरचनाएं साम्राज्यिक, शास्त्रीयतावाद, प्रकार्यवाद तथा औपनिवेशिक आधुनिकता की अवधारणाओं से प्रेरित थीं जिसमें सौंदर्य की अपेक्षा कार्यक्षमता, प्रतीकात्मकता और सत्ता प्रदर्शन को प्राथमिकता दी गई।
बरेली कॉलेज की मुख्य इमारत औपनिवेशिक उपयोगितावाद और नव शास्त्रीय शैली का एक उत्कृष्ट उदाहरण है। इसकी सममित योजना स्तम्भयुक्त बरामदे और विस्तृत कक्ष औपनिवेशिक अनुशासन एवं बौद्धिक नियंत्रण की अवधारणा को दर्शाते हैं। मुख्य इमारत में लाल ईंटों का प्रयोग हुआ है। कलेक्ट्रेट भवन केंद्रीकृत सत्ता संरचना का उदाहरण है। इसका ऊँचा प्रवेश द्वार, केंद्रीय प्रांगण और लंबे गलियारे व्यवस्था सत्ता के केंद्रीकरण को दर्शाती है। यह भवन स्थानीय समाज और औपनिवेशिक प्रशासन के बीच शक्ति संबंधों को स्थापत्य रूप में प्रतिबिंबित करता है। सेंट स्टीफन चर्च, बरेली इसकी लम्बवत संरचना, गोल मेहराब और रंगीन शीशे आध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक प्रभाव को दर्शाते हैं। यह भवन ईसाई मिशनरी गतिविधियों के माध्यम से सांस्कृतिक वर्चस्व स्थापित करने का माध्यम था। इसके अलावा सिविल लाइन्स क्षेत्र जिसमें बंगलो, क्लबों, कार्यालयों की पृथक व्यवस्था हुआ करती थी जो स्थानिक पदानुक्रम को दर्शाती है, जिसमें यूरोपीय और स्थानीय समुदायों के बीच भौगोलिक विभाजन स्पष्ट किया गया। यहाँ औपनिवेशिक कालीन इमारतों का विवरण दिया गया है:

क्र०सं०	इमारत	स्थापत्य विशेषताएँ	ऐतिहासिक महत्व
1.	बरेली कॉलेज, बरेली	स्तंभयुक्त बरामदे सहित योजना, ऊँची छतें, त्रिकोणीय मेहराब, बड़े कक्ष	ब्रिटिश शिक्षा नीति का केंद्र

2.	सेंट स्टीफन चर्च, बरेली	गॉथिक शैली, लकड़ी की छत, रंगीन काँच, गोल मेहराब	ईसाई मिशनरी गतिविधियों का केंद्र
3.	जिला कलेक्ट्रेट, बरेली	नव-शास्त्रीय उपयोगितावादी शैली, केंद्रीय प्रांगण, ऊँचा प्रवेश द्वार, मोटी दीवारें	प्रशासनिक सत्ता का मुख्य केंद्र; राजस्व एवं कानून व्यवस्था का संचालन
4.	सिविल लाइंस, बरेली	औपनिवेशिक नगरीय योजना, बंगले, खुले लॉन, क्लब हाउस	यूरोपीय निवास व्यवस्था एवं सामाजिक पृथक्करण का प्रतीक

5. **विश्लेषण**

रोहिलखण्ड स्थापत्य जहां अंतर्मुखी, सौंदर्यप्रधान और धार्मिक-राजकीय वैभव पर केंद्रित था, वहीं ब्रिटिश स्थापत्य बहिर्मुखी, उपयोगितावादी और प्रशासनिक नियंत्रण पर आधारित था। यह परिवर्तन केवल शैलीगत रूप तक सीमित नहीं थे बल्कि यह सत्ता ज्ञान और संस्कृति के पुनर्संयोजन की व्यापक प्रक्रिया से संबद्ध थे। रोहिलखण्ड के स्थापत्य विकास का विश्लेषण यह दर्शाता है कि यह प्रक्रिया रैखिक न होकर बहुआयामी रही है। रोहिला काल की धार्मिक एवं सौंदर्य प्रधान प्रवृत्तियों से हटकर औपनिवेशिक काल में कार्यात्मकता एवं अनुशासन पर भी बल दिया गया। संक्रमणकालीन संरचनाएं दोनों परंपराओं के समन्वय का उदाहरण प्रस्तुत करती हैं। इस प्रकार स्थापत्य परिवर्तन सामाजिक संरचना में परिवर्तन का दर्पण बनकर उभरता है।

6. **निष्कर्ष**

प्रस्तुत शोध से स्पष्ट होता है कि रोहिलखण्ड की स्थापत्य यात्रा मात्र परिवर्तनों की कहानी नहीं है बल्कि यह वैचारिक, सामाजिक, राजनीतिक, कायांतरण का भौतिक साक्ष्य है। 18वीं शताब्दी का रुहेला स्थापत्य जहाँ अपनी सामरिक अनिवार्यता और मुगल अफगान विरासत के प्रति आग्रह को दर्शाता है, वहीं 19वीं और 20वीं शताब्दी की ब्रिटिश औपनिवेशिक वास्तुकला साम्राज्यवादी तर्कसंगतता और नियंत्रण की ओर उन्मुखता दर्शाती है। रोहिला काल में किला वास्तुकला का केंद्र था जो सुरक्षा और अलगाव का प्रतीक था वहीं ब्रिटिश काल में यह केंद्र कचहरी, कॉलेज, रेलवे स्टेशन में रूपांतरित हो गए। यह अवरोधक स्थापत्य से प्रशासकीय स्थापत्य की ओर महत्वपूर्ण प्रस्थान था।

रामपुर की हामिद मंजिल से सिद्ध होता है कि संक्रमण काल पूर्ण विस्थापन का नहीं बल्कि संवाद का था। तकनीकी और पदार्थगत आधुनिकता जैसे लखौरी ईंट, चूना, सुर्ख़ी की पारंपरिक पद्धति के स्थान पर ईंट, लोहे के गार्डरों अंततः कंक्रीट का प्रयोग होने लगा। औपनिवेशिक वास्तुकला ने सिविल लाइन्स व छावनी के माध्यम से शहरों में स्पष्ट नस्लीय और सामाजिक विभाजन पैदा किया, जिसके फलस्वरूप आधुनिक नगर नियोजन की नींव पड़ी।

संक्षेप में, रोहिलखण्ड का स्थापत्य संक्रमण 'मध्यकालीन सामंतवाद' से 'प्रशासनिक आधुनिकता' की ओर एक क्रमिक गमन है। ये सभी संरचनाएं इस बात का साक्ष्य

प्रस्तुत करती हैं कि स्थापत्य कभी स्थिर नहीं रहता वह बदलते शासक व उसकी विचारधारा और समय की आवश्यकता के अनुरूप स्वयं को पुनः परिभाषित करता रहता है।

सन्दर्भ सूची

1. 1. **Nevill, H.R (**1911) **: Bareilly- A Gazetteer.**
2. 2. **Grewal J.S. (**2010) **: The Afghans in Rohilkhand.**
3. 3. **Strachey, Sir John (**1892) **: Hastings and the Rohella war, Clarendon Press.**
4. 4. **Bayly. C.A (**1983) **: Rulers, Townsmen and Bazaars: North Indian Society in the age of British Expansion,** 1770-1870**. Cambridge University Press.**
5. 5. **Husain, Iqbal (**1994) **: The Ruhela Chieftaincies: The Rise and fall of Ruhela Power in India in the Eighteenth Century.**
6. 6. **Metcalf, Thomas R. (**1989) **: An Imperial Vision: Indian Architecture and Britain's Raj. University of California Press.**
7. 7. **Tillotson, G.H.R. (**1989) **: The Tradition of Indian Architecture. Yale University Press.**
8. 8. **Fergusson, James (**1910) **: History of Indian and Eastern Architecture (Revised by James Burgess). London.**
9. 9. **King, Anthony D. (**1984) **: The Bungalow: The Production of a global culture. Routledge & Kegan Paul.**
10. 10. **Davies, P. (**1985) **. Splendours of the Raj. Penguin Books.**
11. 11. **Khan, R. (**2012) **. Rampur and Rohilla Heritage. New Delhi: Heritage Publishers.**
12. 12. **Spear, P. (**1965) **. A history of India (Vol.** 2) **Penguin Publication.**